ISSN 2394- 5303

Printing® Area

Issue-71, Vol-03 November 2020

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

27] क्षत्रियकुंड, जन्मस्थान (जमुई जिला, बिहार) के जैन धरोहर: एक पुरातात्विक विश्लेषण
डॉ. रवि शंकर गुप्ता, बिहार, पटना ||127

28] गयापाल समाज की खयातनाम नारियाँ
सुश्री ज्योत्सना आनन्द,बोधगया ||136

29] कोरोना संकट : समाजशास्त्र बनाम अर्थशास्त्र
डॉ कुमारी निभा, पटना ||139

30] कामसूत्र के आलोक में शृंगार मंजरी कथा में वर्णित गणिकाओं का अध्ययन
डॉ. लक्ष्मण कुमार प्रभाकर,सीतामढ़ी (बिहार) ||142

31] इंडोनेशियाई मूल्यनाट्यों में रामकथा का प्रभाव
डॉ. योगिता मंडलिक,इंदौर (म.प्र) ||145

32] वैश्वीकरण : साहित्य और समाज
संतोष नागरे, गेवराई जि.बीड ||147

33] वैश्वीकरण के दौर में परिवार का बदलता स्वरुप
डॉ निरंजन कुमार, बोधगया, बिहार ||150

34] सदियों से भारत में नारी शिक्षा का अवलोकन
पल्लवी आनंद,पटना ||152

35] बाल श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति तथा शिक्षा के प्रति उनकी....
डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय, देवरिया, उत्तर प्रदेश ||156

36] बिहारी–सतसई में अभिव्यक्त समय एवं समाज
डॉ.अभिषेक कुमार पटेल,बालोद, छत्तीसगढ ||160

37] कण्डेल नहर सत्याग्रह :– राष्ट्रीय आंदोलन बनाम एक अध्ययन (१९२०)
डॉ. यशोदा साहू,धमतरी (छ.ग.) ||165

38] आधुनिक विज्ञापन स्वरूप एवं संगीत
रेखा सैनी ||170

http://www.printingarea.blogspot.com | www.vidyawarta.com/us

Scanned with CamScanner

सभी नृत्यनाट्यों में रामकथा का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखायी देता है।

संदर्भ :—

- Sakakibara kiitsu, Dances of Asia, first edition:1992, Abhishekhn publication, Chandigarh India
- Vatsyayan Kapila, Asian Dance multiple level, first publication 2011 , BR Rhythms Delhi, ISBN 10:8188827231
- https://ignca.nic.in/coilnet/rkth088.htm - Indonesia ki Ramkatha RamayanKakveen (Ramkatha ki vishesh yatra) Devendra nath Thakur 2006
- https://en.m.wikipedia.org/wiki/wayang

□□□

32

वैश्वीकरण : साहित्य और समाज

(सूर्यबाला की कहानी 'दुग का टीका' के विशेष संदर्भ में)

संतोष नागरे
सहा.प्रा.-हिन्दी विभाग
र.भ. अट्टल महाविद्यालय,
गेवराई जि.बीड

संपूर्ण विश्व को एक ही अर्थनीति के तहत एकत्र लाना वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण एक तरह का आर्थिक साम्राज्यवाद है, जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के माध्यम से फल-फूल रहा है। वैश्वीकरण से उपजी अर्थकेंद्रित उपभोक्तावादी संस्कृति 'बाप बड़ा न बेटा, सबसे बड़ा रुपया' इस सूत्र की नींव पर खड़ी है। बाजार की 'गिव एंड टेक' तथा 'यूज एंड थ्रो' की संस्कृति ने घर में प्रवेश कर परिवार व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया है। आउट डेटेड दवाइयों की तरह बूढ़े माँ- बाप को बोझ समझकर किसी कोने में डाल दिया जा रहा है। भौतिकता की अंधी दौड़ में अभिभावक अपने बच्चों को समय और संस्कार देने से चुक रहे हैं। परिणामतः परिवार से स्नेह सूखता जा रहा है। वैश्वीकरण तथा बाजारीकरण के इस दौर में रिश्तों के बीच की नमी सूखती जाने से परिवार एवं मूल्यव्यवस्था टूट रही है। जिससे नष्ट हो रहे सामाजिक स्वास्थ्य को लेकर प्रो.कुमार कृष्ण कहते हैं, - "आज हम जिस समय में जी रहे हैं वह संचार, आविष्कार, व्यापार का बाजार का समय है। यह मनुष्यता पर होने वाले प्रहार का समय है। ... यह ऐसा समय है जब दुराचार, व्यभिचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, शिष्टाचार, तिरस्कार और रिश्तेदार जैसे शब्द अपना परम्परागत अर्थ खो चुके हैं। यह समय प्यार का समय नहीं, बाजार का समय है।"1

सूर्यबाला समकालीन हिंदी कथा साहित्य की प्रमुख रचनाकार हैं। कहानी, उपन्यास के साथ आपने व्यंग्य विधा में भी कलम चलायी है। 'दिशाहीन में', 'मुंडेर पर', 'एक इन्द्रधनुष्य जुबेदा के नाम','साँझवाती', 'चर्चित कहानियाँ' आदि आपके कहानी संग्रह हैं। सूर्यबाला की कहानियों के केन्द्र में स्त्री है। स्त्री जीवन के विभिन्न रुपों पर प्रकाश डालती उनकी कहानियाँ ग्राम जीवन की सहजता और महानगरों की बनावटी असहजता को बड़ी बारीकी से अधोरेखित

Scanned with CamScanner

करती है। "सूर्यबाला की कहानियों के केन्द्र में नारी है किन्तु उनका परिवेश और कथा फलक इतना व्यापक है कि उनकी कहानियाँ गाँव कस्बे से लेकर महानगर की भागमभाग जिन्दगी में बारीकी से झाँकती हुई यथार्थ का बड़ा प्रामाणिक अंकन करती है।"2

सूर्यबाला जी ने अपनी प्रसिध्द कहानी 'दूज का टीका' के माध्यम से तथाकथित स्वकेंद्री भौतिकतावादी बाजारू सभ्यता एवं संस्कृति में पनपती-फूलती 'गिव एंड टेक' की प्रवृत्ति से टूटती परिवार एवं मूल्यव्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। वैश्वीकरण से उपजी बाजारू उपभोक्तावादी संस्कृति में मूल्य कीमत में तब्दील हो जाने से रिश्तों के बीच की नमी सूखती जा रही है। प्रस्तुत कहानी में दो पीढ़ियों के बीच के संस्कार एवं मूल्यगत अंतर के संघर्ष को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बुआ, कुक्की या जिया तथा रतन पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र हैं, जो रिश्तों की अहमियत को जानते एवं समझते हैं। इसके ठीक विपरीत रीमा, बिन्नी तथा शौनक नयी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिनके लिए पैसा ही सब कुछ है। अतः उन्हें अपनी संस्कृति के त्योहार भी ट्रिक (पैसे झटकने की चालाकी) लगते हैं।

भाई दूज के अवसर पर अपने भाई रतन को टीका लगाने के लिए कुक्की वर्षों बाद अपनी बुआ के घर आयी है। बूढ़ी बुआ चल फिर न सकने के कारण खाट पर बैठी रहती है। वर्षों बाद मिलने की खुशी से अतीत जीवंत हो उठता है। बुआ को विवाह के ढाई वर्ष बाद असमय ही वैधव्य की पीड़ा झेलनी पड़ी, उस समय रतन मात्र छह महिने का था। रतन तथा परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए दिन-रात मेहनत करती बुआ के संघर्ष की साक्षीदार रही कुक्की स्मृतियों के रंग में पूरी तरह से डूब गयी। बुआ द्वारा बिन्नी को आवाज दिये जाने पर उसका समय पर न आना अतिथि के प्रति उपेक्षा भाव का सूचक है। आधुनिकता के इस दौर में 'अतिथि देवो भव:' की हमारी परम्परा खंडित होती जा रही है। बिन्नी द्वारा परोसे गये सूखे चिपड़े काली चाय और बिस्कुट को देखकर रतन जब उसे डाँटने लगता है तब वह कहती है, - " हो रहा है पपा, डोंट बी इंपेशंट। पहले से कहाँ पता था कि 'गेस्ट' आनेवाले हैं, आजकल सभी लोग इन्फार्म करके आते हैं और फिर यह तो शायद रहेंगी अभी। कोई भागी तो नहीं जा रही।"3

आत्मनिर्भरता और भौतिक सुख-सुविधा के लिए अपने परिवार की उपेक्षा करनेवाली रीमा आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। जिसके लिए पैसा ही मूल्य है। अधिक तनख्वाह के लिए ही उसने स्कूल की नौकरी छोड़ दी। अब वह कारखाने में नौकरी करने लगी है। जिससे वह घर में कूलर, फ्रिज, चीजें तथा कामों नौकरानी को रखने की सामर्थ्य जुटा पायी है। पति से अधिक आय के कारण ही घर का रिमोट कंट्रोल रीमा के हाथों में आ गया। परिवार में बढ़ते इस महत्व के कारण ही वह अपने पति रतन को अपने इशारे पर नचाने लगी। जिसे देखकर आहत हुई बुआ कुक्की से कहती है- "और यह नौकरी न करके यह बिन्नी को ज्यादा बहुमूल्य उपहार दे सकती थी कुक्की ! ज्यादा लाड़-दुलार, सार- संभार और शुभ संस्कारों का उपहार। वह बच्चों को ज्यादा समय दे पाती। ट्यूटर की जगह वह खुद बच्चों की पढ़ाई देखती और बच्चे फेल होकर मुँह चुराते न घूमते। तब बिन्नी मुझे हाथ पकड़कर बाथरूम भी ले जाती और माँ को चाय का प्याला भी थमाती।"4 यहाँ प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से गृहिणी और कामकाजी नारी तथा भावना और भौतिकता के द्वन्द्व को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

अपने बच्चों को आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ानेवाली रीमा अनायास ही अपने बच्चों के साथ अकेलेपन की दलदल में धँस रही है। शौनक को अधखाई प्लेट छोड़ते देख कुक्की ने बचपन में बुआ द्वारा फुसला-फुसलाकर खाना खिलाने की याद दिलाने पर भी बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने की अपनी जिद को दोहराती हुई रीमा कहती है, - "यहाँ सब अपना - अपना काम खुद करते हैं, एक -दूसरे का कोई नहीं। शुरु से ही ऐसी आदत आत्मनिर्भरता की, अपने पैरों पर आप खड़े होने की, अपने दुख-सुख आप निपटा लेने की ..।"5 आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़े शौनक और बिन्नी आत्मकेंद्रित हैं। भाई दूज के अवसर पर अपने रक्षक भाई की दीर्घायु के लिए व्रत रखने से इंकार करती बिन्नी कराटे सीखकर अपनी रक्षा स्वयं करने पर बल देती है। तो शौनक को भाई दूज के अवसर पर अपनी बहन को उपहार देना पैसे झटकने का ट्रिक (चालाकी) लगती है। वह कहता है, - "सो व्हाट ! कौन सा बड़ा एहसान कर देगी ... यह सब ट्रिक है ट्रिक, पैसे झटकने की ... चम्मच भर दही और चावल चिपकाकर लाओ पैसे ... मैं पहले से कहे देता हूँ, एक पैसा नहीं दूँगा न मम्मी डैडी को देने दूँगा ...।"6 यहाँ पर प्रत्यक्ष- परोक्ष रूप से माता-पिता द्वारा बच्चों पर किये गये संस्कार बोलते हैं। भौतिकता के पीछे भागते माता-पिता अपने बच्चों को समय और संस्कार देने में अक्सर असमर्थ पाये जाते हैं।

वर्षों बाद भाई दूज के अवसर पर पधारी कुक्की ने पाटे पर बैठे अपने भाई रतन के माथे पर रोली- अक्षत चिपकाया तो उसका मन भर आया। उपहार स्वरूप रतन ने सुनहरा सिक्का उसे भेंट किया। प्रेमपूर्वक दिये गये इस अनमोल उपहार से कुक्की की आँखे भर आयी। रतन द्वारा कुक्की को सोने का सिक्का उपहार दिये जाने की खबर लेकर शौनक और बिन्नी अपनी माँ रीमा के पास पहुँचे। तब

रीमा बच्चों को फुसफुसाते हुए समझाने लगी - " ऐसा है न कि यह इतनी दूर से आयी हैं इतने दिनों बाद। तुम्हारे डैडी, दादी की इन लोगों ने काफी मदद भी की थी। अच्छी तरह अपने घर में रखा। वैसे उसके बदले तो तुम्हारी दादी ने इनके घर की इतनी देखभाल भी की ... पर ... खैर अब रिश्ते की बहन तो हुई और वैसे भी इन्हें जाते समय कुछ -न - कुछ प्रजेंट और वापसी का किराया तो डैडी देते ही देते तो उसके बदले इस तरह दे दिया। इस तरह का 'गिव एंड टेक' तो करना ही पड़ता है। हाँ, यह जरा ज्यादा ही पड़ गया, क्योंकि डैडी ने इनके काफी कुछ एहसान तो पहले ही चुका दिए हैं। और आजकल तो सोवरेन (सोने के सिक्के) की कीमत काफी ज्यादा है ... ।"7

यह सब सुनकर उस सोने के सिक्के के प्रति कुक्की के मन में घृणा उत्पन्न हुई। अतः शाम को जाते समय सोने का सिक्का रतन को लौटाते हुए वह बोली, - "रतना! बड़ी हूँ तुमसे। उस समय चौके पर लौटाना या ना करना तुम्हारे प्यार की बेकद्री होती। एक खूबसूरत क्षण की हत्या ... और अब भी, सिर्फ उसे लौटा रही हूँ... इसके साथ जितना, जो कुछ दिया, सब सहेजकर बाँधे लिए जा रही हूँ... ।"8 अपने भाई से मिले प्रेम को दुनिया का सबसे अनमोल उपहार माननेवाली कुक्की प्रेम के महत्व को न समझकर उसकी कीमत आँकनेवाले नयी पीढ़ी के शौनक और बिन्नी से कहती है, - " बाजार में जो कीमत आजकल सोने के सिक्के की होगी न, उससे कहीं - कहीं ज्यादा कीमती है यह सिक्का, समझे !"9 यह सब सुनकर भी रतन ने दोबारा उस सिक्के को लेने की जिद कुक्की से नहीं की। उसे आज अपने बहन के प्रेम की अपेक्षा वह सोने का सिक्का अधिक प्रिय लगा। वैश्वीकरण से उपजी अर्थकेंद्रित बाजारवादी संस्कृति में अपना रतन भैया भी कब का पराया हो चुका है। सूर्यबाला अंत में कहती है, - " कितना अपना था रतन भैया, जो उसने एक बार भी दोबारा उस सिक्के को लेने की जिद मुझसे नहीं की ... ।"10

सारांश :-

वैश्वीकरण के इस दौर में मूल्य कीमत में तब्दील हो जाने से पारिवारिक एवं सामाजिक स्वास्थ नष्ट हो रहा है। जिसे सूर्यबाला जी ने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'दूज का टीका' में दो पीढ़ियों के मूल्य एवं संस्कारगत अंतर तथा भावना और भौतिकता के द्वन्द्व के माध्यम से बड़ी सहजता एवं सरलता के साथ अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ :-

1) संपा.प्रो. श्रीराम शर्मा, समकालीन हिंदी साहित्य : विविध विमर्श, पृ.11
2) संपा. डॉ. माधव सोनटक्के, कथा संसार, पृ.127
3) वही, पृ.103
4) वही, पृ.105-106
5) वही, पृ.107
6) वही, पृ.109
7) वही, पृ.110
8) वही, पृ.110
9) वही, पृ.110
10) वही, पृ.110

□□□

Scanned with CamScanner